RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 43 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 6 जनवरी, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत्
1960853119 दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक
शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-75, अंक : 43, 3-6 जनवरी 2019 तदनुसार 22 पौष, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

फ़सादियों को नीचा दिखा

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः।
अधमं गमया तमो यो अस्माँ अभिदासति॥

-ऋ० १।२१।२

शब्दार्थ-हे **इन्द्र** = राजन्! सेनापते! **नः** = हमारे **मृधः** = मसलने वालों को **वि** = विशेषरूप से **जहि** = मार दे। **पृतन्यतः** = फ़साद की कामना करने वाले को **नीचा** = नीचे **यच्छ** = दबा दे। **यः** = जो **अस्मान्** = हमको **अभिदासति** = दबाना चाहता है, बाँधना चाहता है, नष्ट करना चाहता है, उसको **अधमम्** = घोर **तमः** = अन्धकार में **नय** = ले जा।

व्याख्या-'रुचीनां वैचित्र्यात्' मनुष्य-समाज में भले-बुरे दोनों प्रकार के मनुष्य होते हैं। राष्ट्र का हित इसी में है कि स्थिर शान्ति रहे। अशान्ति और उपद्रव के कारण विद्या, शिल्प, व्यवसाय आदि देशोन्नतिकारक सभी शुभ उद्योगों का ह्रास होता है, वृद्धि नहीं होती। राष्ट्रहितैषी का कर्त्तव्य है कि वह प्राणपण से देश में शान्ति स्थापित रखे। राष्ट्रवासी जन राष्ट्रपिता से कह रहे हैं-**'वि न इन्द्र मृधो जहि'**= इन्द्र! राजन्! हमारे मृधों=मसलने वालों को मार दे। राजा का कर्त्तव्य है कि प्रजापीड़कों को, चाहे वे उच्चपदस्थ ही क्यों न हों, मार दे। प्रजा राज्य का मूल है। जिस प्रकार किसी वृक्ष का मूल मसल देने से उस वृक्ष की बाढ़ रुक जाती है और वह क्रमशः सूखकर भूमि पर आ गिरता है, इसी प्रकार यदि प्रजा को राजकर्मचारी, अथवा चोर-डाकू व अन्य आततायी दस्यु आदि मसलते रहें, पीड़ित करते रहें और उसका उपाय या प्रतीकार न किया जाए तो उसके सूख जाने से अन्त में राज्य भी सूखेगा। राज्य के साथ राजा या राष्ट्रपति भी समाप्त होगा, अतः राष्ट्रवादियों की यह माँग कि **'वि न इन्द्र मृधो जहि'** सर्वथा उचित और मान्य है। अथर्ववेद [१।२१।३] में मानो इस माँग का विस्तार है-**'वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज'**= राक्षसों को, प्रजोत्पीड़कों को मार दे और प्रजाशोषक के हनु तोड़ दे अर्थात् प्रजाघाती दुष्टों को कठोर-से-कठोर दण्ड देना चाहिए। प्रजा की दूसरी माँग है-**'नीचा यच्छ पृतन्यतः'** फ़सादियों को नीचा दिखा, दबा दे।

फ़साद, फ़ितना=उपद्रव के कारण प्रजा में विह्वलता तथा विकलता बढ़ी रहती है, इससे प्रजा कोई भी सत्कार्य नहीं कर सकती। जिन देशों में राष्ट्रप्रबन्ध की अव्यवस्था के कारण सदा पृतना=फ़ितना=फ़साद=उपद्रव-झगड़े होते रहते हैं, वे देश जीवनोपयोगी सामग्री के लिए सदा परमुखापेक्षी ही रहते हैं। राष्ट्रपति का यह एक प्रधान कर्त्तव्य है कि देश की अन्तरङ्ग शान्ति को स्थिर रखे। ऋग्वेद [१०।१५२।२] में इन्द्र=राजा के सम्बन्ध में कहा गया है-

स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा वि मृधो वशी।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयङ्करः॥

राजा स्वस्तिदा=कल्याणदाता, शान्तिप्रदाता, प्रजापालक, पापनाशक, प्रजोत्पीड़कों का नियन्त्रणकारी, सुखवर्षक, ऐश्वर्यरक्षक और अभयङ्कर=भयरहित करने वाला हमारा नेता हो।

राजा का काम है कि प्रजा में स्वस्ति स्थापना करे और प्रजा के ऐश्वर्य की रक्षा द्वारा उनको निर्भय करे। अन्तरङ्ग-शान्ति के साथ बाह्य आक्रमणों से भी रक्षा करना राजा का धर्म है। **अधमं गमया तमो यो अस्माँ अभि दासति'**= उन्हें घोर अन्धकार में पहुँचा, जो हमें बाँधना चाहता है।

राजा यदि परराज्यापहारी से प्रजा की रक्षा न करेगा तो अपना राज्य खो बैठेगा।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर की अन्तरंग सभा दिनांक 11 नवम्बर 2018 के निश्चयनुसार सभा के तत्वावधान में आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन **3 फरवरी 2019** रविवार को बरनाला में करने का सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 3 फरवरी 2019 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में बरनाला में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें। इससे पूर्व भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में सफल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर चुकी है इसलिये सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारने का कष्ट करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

वेदों में आधुनिक विज्ञान

ले.-कृपाल सिंह वर्मा 253, शिवलोक, कंकर खेड़ा, मेरठ

(क) विद्युत का अन्य शक्तियों में रूपान्तरण

वेद विज्ञान की पुस्तक है। वेद मन्त्रों की अवैज्ञानिक व्याख्या होने के कारण वेद जन सामान्य से दूर हो गये। वैदिक विज्ञान की भाषा में Electricity को इन्द्र कहते हैं। विद्युत को हम प्रकाश के रूप में भी प्राप्त कर सकते हैं, उष्मा के रूप में भी, बल के रूप में भी। इस प्रकार अनेक रूपों में प्राप्त कर सकते हैं। यहां वैज्ञानिक तथ्य यजुर्वेद 6/32 में दिखाया गया है।

(क) 'इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवते'

(यजु. 6/32)

हे मनुष्यो, आप लोक इन्द्र अर्थात् विद्युत को वसुमत् अर्थात् पृथ्वी पर पायी जाने वाली अनेक प्रकार की शक्तियों के रूप में प्राप्त कर सकते हो तथा रुद्रवत् अर्थात् अन्तरिक्ष में पायी जाने वाली शक्तियों के रूप में प्राप्त कर सकते हो।

(ख) 'इन्द्राय त्वादित्यवते'

(यजु. 6/32)

इन्द्र अर्थात् विद्युत् को आदित्य अर्थात् प्रकाश के रूप में प्राप्त कर सकते हैं।

'Electricity can be conerted into Light.'

(ग) 'इन्द्राय त्वाभिमातिघ्ने'

(यजु. 6/32)

विद्युत का प्रयोग युद्धक्षेत्र में शत्रु को मारने के लिये किया जा सकता है। अभिमति का अर्थ है शत्रु।

(घ) 'श्येनाय त्वा सोमभृते'

(यजु. 6/32)

यज्ञ के द्वारा अर्थात् वैज्ञानिक युक्तियों के द्वारा विद्युत शक्ति का उपयोग पक्षियों की तरह आकाश में उड़ने के लिये किया जा सकता है।

(ङ) 'अग्ने त्वा रायस्पोषदे'

(यजु. 6/32)

हे मनुष्यो, वैज्ञानिक युक्तियों से विद्युत का उपयोग अग्नि उत्पन्न करने के लिये किया जा सकता है। इस अग्नि से धन प्राप्त किया जा सकता है।

(ख) वैदिक विज्ञान के कुछ पारिभाषिक शब्द

1. प्राण क्रिया: जिस क्रिया से पदार्थों का तापक्रम बढ़ता है उसे वैदिक विज्ञान की भाषा में प्राण क्रिया कहते हैं तथा इस क्रिया के कारक को प्राण कहते हैं। ब्रह्माण्ड को सूर्य प्राण प्रदान करता है। अग्नि प्राण का रूप है। अन्न शरीर को प्राण प्रदान करता है। इस प्रकार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में प्राण क्रिया निरन्तर चलती रहती है।

2. अपान क्रिया: जिस क्रिया से पदार्थों का तापक्रम कम होता है उसे अपान क्रिया कहते हैं। ब्रह्माण्ड में जल, वायु, रात्रि एवं शरद् ऋतु अपान क्रिया द्वारा तापक्रम को कम करती हैं। प्राण क्रिया तथा अपान क्रिया के सन्तुलन के कारण पृथ्वी का ताप स्थिर रहता है तथा शरीर में होने वाली अपान क्रिया के कारण तथा प्राण क्रिया के कारण शरीर का तापक्रम स्थिर रहता है। तापक्रम का अत्यन्त बढ़ना अथवा घटना दोनों ही जीवन के लिये हानिकारक हैं। मल-मूत्र का त्याग तथा पसीना आना अपान के कारण होता है। ये शरीर का तापक्रम कम करने का आन्तरिक अपान क्रिया है।

3. उदान क्रिया: जिन क्रियाओं के कारण शरीर अथवा ब्रह्माण्ड का तापक्रम स्थिर होकर बना रहता है, उसे उदान क्रिया कहते हैं। इस क्रिया के कारक को उदान कहते है। दूसरे शब्दों में शरीर अथवा ब्रह्माण्ड में स्थित ताप को उदान कहते हैं।

4. व्यान क्रिया: जिन क्रियाओं के द्वारा शरीर अथवा ब्रह्माण्ड का संचालन किया जाता है उसे व्यान क्रिया कहते हैं तथा इसके कारक को व्यान कहते हैं। आदित्य अर्थात् सूर्य के प्रकाश द्वारा ब्रह्माण्ड का संचालन होता है तथा व्यान के द्वारा शरीर का संचालन होता है।

5. समान क्रिया: जिस क्रिया के द्वारा शरीर अथवा ब्रह्माण्ड में सब स्थानों पर आवश्यकता अनुसार पदार्थ पहुंचाया जाता है उसे समान क्रिया कहते हैं तथा इसके कारक को समान कहते हैं। इस प्रकार प्राण, अपान, व्यान, उदान तथा समान ये सब विद्युत क्रियाएं हैं।

6. गार्हपत्य अग्नि: सूर्य के प्रकाश में पेड़, पौधे अपने भोजन का निर्माण करते हैं तथा बढ़ते हैं। ये अपने अन्तर सूर्य से आने वाली अग्नि को संचित कर लेते हैं जो इनके जलाने पर प्रकट होती है। वैदिक विज्ञान की भाषा में इसे गार्हपत्य अग्नि कहते हैं।

7. आवाहनीय अग्नि: जो अग्नि सूर्य से सीधे प्राप्त होती हो रही है उसे आवाहनीय अग्नि कहते हैं।

8. अनुहार्यपचन: अन्तरिक्ष में पायी जाने वाली अग्नि अनुहार्य-पचन अथवा दक्षिण अग्नि कहते हैं।

9. वैश्वानर अग्नि: शरीर में पायी जाने वाली अग्नि जिससे भोजन पचता है तथा शरीर चलता है, वैश्वान्नर अग्नि कहते हैं।

(ग) उष्मा की तीन गतियां

वेद विज्ञान की पुस्तक है। वेद मन्त्रों की अवैज्ञानिक व्याख्या के कारण वेद जन सामान्य से दूर हो गये।

उष्मा चालन तीन प्रकार से होता है-1. चालन, 2. संवहन, 3. विकरण। लोह आदि ठोस पदार्थो में उष्मा चालन (Conduction) द्वारा एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाती है। धातु के परमाणु अपना स्थान नहीं बदलते। द्रव तथा वायु में जब उष्मा गति करती है तो परमाणु अपना स्थान बदलते हैं। इसे संवहन कहते हैं। सूर्य किरणों से आने वाली उष्मा (Heat) बिना किसी माध्यम के पृथ्वी सतह पर आती है। इसे विकरण कहते हैं। यही वैज्ञानिक तथ्य यजुर्वेद 5/8 में इस प्रकार वर्णन किया गया है-

(क) 'यातेऽअग्नेऽय: शया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा। उग्रं वचोऽअपावधीत त्वेषं वचोऽअपावधीत् स्वाहा।।'

(यजु. 5/8)

अय: कहते हैं लोह आदि धातुओं को। हे अग्ने लोह आदि धातुओं के अन्दर निर्मित जो तुम्हारा शरीर है, वह अपनी विशेषताओं से युक्त होता है तथा वह उग्र व तीव्र ध्वनियों से धातु की रक्षा करता है।

(ख) या ते अग्ने रज: शया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा। उग्रं वचोऽअपावधीत् त्वेषं वचोऽअपावधीत सवाहा।।

(यजु. 5/8)

रज: शब्द का प्रयोग जल तथा वायु के लिये होता है। रज: शया का अर्थ है जल तथा वायु में स्थित उष्मा। जल तथा वायु में स्थित उष्मा की अपनी विशेष विशेषताएं होती हैं। यह उग्र तथा तीव्र ध्वनियों के प्रभाव को समाप्त करती है।

(ग) या ते अग्ने हरिशया तनुर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा। उग्रं वचोऽअपावधीत् त्वेषं वचोऽअपावधीत् स्वाहा।।

(यजु. 5/8)

हरि कहते हैं सूर्य किरणों को। सूर्य किरणों में स्थित उष्मा विकरण द्वारा पृथ्वी सतह तक आती है। इसकी अपनी विशेषताएं होती हैं तथा यह उग्र व तीव्र ध्वनियों से रक्षा करता है।

इस प्रकार अग्नि के तीन रूप हैं-

1. अय: शया-ठोस धातु में स्थित उष्मा।

2. रज: शया-द्रव तथा वायु में स्थित उष्मा।

3. हरि शया-सूर्य किरणों में स्थित उष्मा।

तीनों प्रकार की उष्माओं की अपनी अलग विशेषताएं हैं। इनमें एक बात सामान्य है कि ये तीव्र व उग्र ध्वनि प्रभाओं से अपने घरों की रक्षा करती हैं।

(घ) आत्मा कैसे देखता है?

शतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद का सबसे प्राचीन भाष्य है। आत्मा किस प्रकार देखता है? इसका वर्णन शतपथ ब्राह्मण के काण्ड 12, अध्याय 8, ब्राह्मण 2, कण्डिका 25 में किया गया है।

चक्षुर्वाऽआश्विनो ग्रह। प्राण: सास्वतो वागैन्द्र आश्विनात्सार-स्वतेऽवनयति चक्षुरेवास्य तत्प्राणे: संधाति सारस्वतादैन्द्र: प्राणेनवास्य तद्वाचा संधात्यथो प्राणेनवास्य तद्वाची प्रतिष्ठापयति तस्मात्सर्वे प्राण वाचि प्रतिष्ठित।।25।।

अर्थ: अश्विन ग्रह चक्षु है, सारस्वत ग्रह प्राण है, इन्द्र ग्रह वाक् है। अश्विन ग्रह से सारस्वत ग्रह में उड़ेलता है। इससे प्राणों में चक्षु का मेल कराता है। सारस्वत ग्रह से ऐन्द्र ग्रह में, इस प्रकार प्राण और वाणी का मेल कराता है और उसके प्राण के द्वारा उसको वाक् में स्थापित करता है। इसलिये सब प्राण वाणी में प्रतिष्ठित हैं।।25।।

आत्मा का आकार अत्यन्त सूक्ष्म होता है।

'बालाग्र शतभागस्य शत्धा कल्पितस्य च।'

(श्वेताश्वेतर उपनिषद)

बाल के अनुभाग के सौवें भाग का भी सौवां भाग अर्थात् 100×100 = 10,000वां भाग अर्थात् बाल के अग्रभाग का दस हजारवां भाग के बराबर आत्मा का आकार होता है।

(क्रमश:)

सम्पादकीय

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का सन्देश

23 दिसम्बर 2018 रविवार को सम्पूर्ण आर्य जगत में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का कार्यक्षेत्र हमेशा से ही श्रद्धा और विश्वास पर आधारित रहा है। जीवन के प्रथम चरण में जब मुन्शीराम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शन नहीं किए थे तब तक वे आस्थाहीन, ईश्वर को न मानने वाले, यहां-वहां भ्रमण कर रहे थे। अनेक दुर्गुण और व्यसनों ने जीवन ग्रसित हो चुका था। बरेली में मुन्शीराम का स्वामी दयानन्द से प्रथम साक्षात्कार हुआ तो उसी क्षण उनके जीवन में परिवर्तन की शुरूआत हुई। मुन्शीराम वकालत कार्य करते हुए भी प्रसन्तापूर्वक उस व्यवसाय के दुर्गुणों से बचते रहे और जब उन्होंने स्वामी दयानन्द के मिशन की पूर्ति के लिए कदम आगे बढ़ाया तो फिर यह ध्यान ही नहीं रहा कि मेरा व्यवसाय क्या है। सब व्यवसायात्मक कार्यों को पूरा करके शिक्षा के क्षेत्र में सूत्रपात किया। कौन जानता था कि उनके द्वारा लगाया गया कांगड़ी गांव में वह छोटा सा पौधा एक दिन विशाल व सुदृढ़ वटवृक्ष का स्थान ले लेगा और अनेक ज्ञानपिपासु पथिक उसकी अमृतमय छाया को प्राप्त कर तृप्ति का अनुभव करेंगे। स्वामी श्रद्धानन्द के अन्दर गुरूकुल के लिए कितनी श्रद्धा थी, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने गुरूकुल के लिए अपनी सम्पत्ति का दान तथा उससे भी बढ़कर गुरूकुल कांगड़ी के लिए सर्वप्रथम अपनी सन्तानों का दान कर दिया। ये दो बातें सिद्ध करती हैं कि स्वामी श्रद्धानन्द अपने संकल्प पर कितने दृढ़ थे।

श्रद्धा उत्पादन सरल कार्य नहीं है। श्रद्धा प्राप्ति से पूर्व दो वस्तुओं का होना अनिवार्य है, व्रत और दीक्षा। बिना निश्चयात्मक शक्ति तथा कुशलता के हम कोई भी कार्य पूर्ण नहीं कर सकते। फिर स्वामी श्रद्धानन्द जैसे तमाम महापुरूषों ने तो पराक्रम तथा यश व विशालता से परिपूर्ण अनेक कार्य किए। स्वामी श्रद्धानन्द का सम्पूर्ण जीवन श्रद्धा से परिपूर्ण रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द का सारा जीवन इसी को केन्द्रबिन्दु बनाकर चारों ओर घूमता है। सन्यास ग्रहण करते समय स्वयं उन्होंने यह बात स्वीकार की थी और कहा था कि आज तक मैं सारा जीवन ऋषि दयानन्द के चरणों में बिताने का प्रयास करता रहा हूं। इसीलिए मैं अपना नाम स्वामी श्रद्धानन्द रखना चाहता हूं। ऋषि चरणों में अपनी अगाध श्रद्धा को अभिव्यक्त करते हुए 1925 ई. में मथुरा जन्म शताब्दी के अवसर पर जो भावपूर्ण श्रद्धाजंलि स्वामी जी ने अर्पित की थी, उसका एक-एक शब्द हृदय वीणा के तारों को छूने वाला है-

ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो गए हैं परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पटल पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी रक्षा की है? तुमने कितनी गिरती हुई आत्माओं की काया पलट दी है? इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? बिना परमात्मा के जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है? परन्तु अपने विषय में कह सकता हूं कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरती हुई अवस्था से उठा कर सच्चा जीवन लाभ करने योग्य बनाया है। मैं क्या था, क्या बन गया और अब क्या हूं, वह सब तुम्हारी कृपा का परिणाम है। भगवन्! मैं तुम्हारा ऋणी हूं, उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूं। इसलिए जिस परमपिता की असीम गोद में तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूं कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करे!

स्वामी श्रद्धानन्द सच्चे अर्थों में युगपुरूष थे। वे जिधर को चलते थे समय उनके पीछे चलता था। जनता उनके संकेत पर चलने को कटिबद्ध थी। स्वामी श्रद्धानन्द ने सभी क्षेत्रों में ऋषि के मन्तव्यों, वचनों, लेखों तथा इच्छाओं को क्रियात्मक रूप देने का बीड़ा उठाया। ऋषि मन्त्रदाता थे तो स्वामी श्रद्धानन्द मन्त्र साधक थे। विदेशी शिक्षा प्रणाली के विरूद्ध आन्दोलन के रूप में उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की और इस युग में एक बार पुनः ब्रह्मचर्याश्रम पद्धति के आदर्श को सजीव कर दिया। आर्य जाति की रक्षा के लिए भी उन्होंने प्रयास किया। धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र के साथ-साथ स्वामी श्रद्धानन्द ने राजनीति के क्षेत्र में भी श्रद्धा और पूर्ण विश्वास के साथ कार्य किया। उनकी राजनैतिक गतिविधियां भी उतनी ही प्रभावशाली थी जितनी धार्मिक क्षेत्र की। राष्ट्र के स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में उनका स्थान एक यशस्वी और सेनानायक के रूप में सुरक्षित है। गोरे शासकों के क्रूर अत्याचारों से आतंकित पंजाब कांग्रेस का अधिवेशन बुलाने का किसी में साहस नहीं हुआ तो स्वामी श्रद्धानन्द जी मैदान में उतरे और अमृतसर में कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन आयोजित किया। वे स्वयं इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बनें और अपने साहस, परिश्रम और श्रद्धा से इस कार्यक्रम को सफल किया।

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस से प्रेरणा लेते हुए हम भी उनके श्रद्धामय जीवन से शिक्षा लेकर मानवता के कार्य करें। स्वामी श्रद्धानन्द ने सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए कार्य किया। अपनी संस्कृति, सभ्यता और मातृभूमि के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी सम्पूर्ण जीवन प्रेरणाओं से भरा हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द एक सच्चे कर्मयोगी थे। महात्मा गांधी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजंलि देते हुए कहा था कि स्वामी श्रद्धानन्द जी एक सुधारक थे। कर्मवीर थे, वाक्शूर नहीं। उसका जीवन जागृत विश्वास था। इसके लिए उन्होंने अनेक कष्ट उठाए थे। वे संकट आने पर कभी घबराए नहीं थे। वे एक वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग शय्या पर नहीं, किन्तु रणांगन में मरना पसन्द करता है। स्वामी श्रद्धानन्द का केवल बलिदान दिवस मनाकर ही हम अपने कर्त्तव्य की इतिश्री न कर लें अपितु उन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर चलते हुए मानवता के कल्याण के लिए जो-जो कार्य किए हैं, उन कार्यों को अपनाकर आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें। स्वामी श्रद्धानन्द जी जिस श्रद्धा के साथ अपना सर्वस्व त्याग कर कर्मक्षेत्र में उतरे थे उसी प्रकार हम भी त्याग भाव से महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर चलते हुए आर्य समाज के लिए कार्य करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

पुत्र का योग-१. जिसके कन्या होती हों। उसको जौ का चूर्ण आक के दूध में मिलाकर गोली बना कर छाया में सूख खाने पर शीशी में रख लें। १ गोली प्रातः सांय गो दुग्ध से सेवन करें। औषधि काल में दूध चावल खायें। ३ माह का गर्भ हो जाय तब गोली खाना प्रारम्भ करें।

पीलिया रोग-१. फिटकरी सुहागा १०-१० ग्राम लेकर दोनों वस्तुओं को आग पर फूलाकर पीस छानकर मिला लें आधा ग्राम लेकर पान में रखकर खायें। (अनुभूत योग है)

२. फिटकरी का फूला ३ ग्राम १ गिलास छाछ के साथ घोलकर पियें। लाभप्रद है।

३. मूली व मूली के पत्तों का सेवन करें।

फियास-नीबू के रस में नारियल का तेल मिलाकर बालों में मालिश करें। पेट साफ रखें। शरीर में खुश्की न रहने दें। १ माह सेवन करें।

पेशाब में रूकावट-अमल तास के बीज की गिरी पानी में पीस कर नाभि के नीचे पेड़ पर लेप करें। सूखने पर गीला कपड़ा रख कर लेप को गीला कर दें। पेशाब खुल कर आयेगा।

प्रमेह-छोटी दुधी उखाड़ कर छाया में सुखाकर मिश्री मिला कर शीशी में रख लें। सुबह शाम ५ ग्राम ताजा जल से पीयें।

फूला-१. ओंधा त्रिरचिटा की जड़ का रस शुद्ध शहद देशी मधु मक्खी का मिलाकर आँखों में लगायें। फूला व जाला नष्ट होता है।

२. कच्चे आलू को पत्थर पर घिसकर लगायें ५, ६ वर्ष पुराना फूला कट जाती है।

३. रीठे का छिलका घिसकर आँखें में लगायें।

फियास-नींबू का रस चीनी में मिलाकर सिर में लगायें। ४, ५ घन्टे बाद सिर को धोयें फियांस दूर होगी।

बवासीर-१. हुल-हुल के पत्ता ५ काली मिर्च १ ग्राम पीसकर १ कप पानी में मिलाकर पियें।

२. नाग केशर मिश्री समभाग पीसकर लौनी घी में मिलाकर चाटें।

बवासीर-आक के पत्ते घोंट पीसकर मस्सों पर लगायें। वादी बवासीर के मस्से नष्ट हो जायेंगे। बड़ी हरड़ का चूर्ण गुड़ में मिला कर खायें। मात्रा चूर्ण ३ ग्राम गुड़ ५ ग्राम प्रातः सांय। चीनिया कपूर १० ग्राम सरसों के तेल में पका कर शीशी में भर लें। फुरैरी से मस्सों पर लगायें।

बवासीर खूनी-दूव का रस निराहार १ सप्ताह पियें। मात्रा १० ग्राम दूव २० ग्राम पानी मिलालें।

बहरापन-विलवादी तेल ड्रापर से कानों में डालें।

१. हाथी दांत का चूर्ण बारीक पीसकर कपड़ छन कर २ ग्राम प्रातः सांय गौ दुग्ध से पियें।

२. नागौरी असगन्ध का चूर्ण मासिक धर्म से शुरू होने पर। ३ ग्राम गौ दुग्ध से पियें। दूध में मिश्री मिलाकर पियें।

बाँझपन-१. स्त्री के शरीर का मोटा होना।

२. माहवारी का दर्द से आना या आगे पीछे आना।

३. सफेद प्रदर की शिकायत होना।

४. बच्चे दानी का टेढ़ा पन

५. बच्चे दानी के पक्ष किनारों पर सफेद २ झाग का जम जाना।

६. बच्चे दानी पर चर्बी जम जाना।

७. पेट का बहुत बढ़ जाना आदि कारणों गर्भ नहीं ठहरता है। ऐसी स्थिति में स्त्री का इलाज योग्य चिकित्सक की देख रेख में होना चाहिये।

मधुमेह-८. जामुन की गुठली का चूर्ण २ ग्राम ठन्डे जल के साथ सेवन करें।

९. नीम का पत्ती ५ ग्राम सुबह खाली पेट चबायें।

१०. टमाटर का रस १५ दिन पियें। मात्रा १० ग्राम सुबह शाम।

मुंह के छाले-जासुन के पत्तों का रस दिन में ३ बार पियें।

पीलिया-बथुआ का रस १ ग्राम सेंधा नमक मिलाकर निराहार ३ दिन पियें।

नासूर-१. बड़ की कोमल कोंपलों का रस निकाल कर उसके समान तिल तेल लेकर गर्म करें जब तेल रह जावे उसे उतार कर छानकर शीशी में रख लें। इस तेल को २, ३ बार फुरैरी से नासूर पर लगायें। पूर्ण लाभ होगा।

२. बड़ के दूध में सांप की कैंचली की राख मिलाकर उसमें पतले कपड़े को भिगोकर तर कर लें। उसकी बत्ती बनाकर (नासूर) ब्रण में भरने से कुछ ही दिन में नासूर ठीक हो जाता है। प्रतिदिन वत्ती को बदल देना चाहिए।

पित्ती रोग-१. घी में सैधा नमक मिलाकर शरीर पर लेप करें लाभप्रद है।

२. निवोली (नीम का फल) सरसों के तेल में जलाकर तेल की मालिश करें।

पीनस-परवा की पत्तियों का ताजा रस नाक तथा कानों में डालें।

फियास-नारियल के तेल में कपूर मिलाकर सिर पर मलें। मात्रा तेल १०० ग्राम कपूर ३ ग्राम

फूला-यदि चेचक के कारण हुआ है तो अरहर की कोंपलों का रस डालें।

ककरोंदा के पत्तों का रस निकाल ड्रापर से २ बूंद आँख में डालें।

फेफड़े की गर्मी-कुश की जड़ ३ ग्राम, काली मिर्च १ ग्राम २०० ग्राम पानी में पीस कर पियें।

धुन्ध जाला-सफेद चिलमिही पान रस आँजो आँखन माहि।
धुन्ध कटे, जाली मिटे, देख लो अजमाय।।

फोड़ा-१. निर्विशी बून्द को पीसकर फोड़े पर लेप करें। शीघ्र लाभ होगा।

२. रत्न ज्योति बूटी की जड़ पीसकर फोड़े पर लेप करें। अति लाभप्रद है।

३. ओंधा के पत्ते पीसकर लेप करें। उसी दिन आराम मिलेगा।

४. पीपल के नर्म पत्ते बाधें। फोड़ा बैठ जायेगा।

५. पीपल की जड़ का लेप करें।

६. नीम के पत्तों को पीसकर पुल्टिस बना कर फोड़े फुसियों पर बाधें।

७. हंसराज बूटी के पत्तों को पीसकर शुद्ध घी में छोंक कर सुहाता-सुहाता फोड़े पर बाधें।

८. कनेर की जड़ की छाल को पानी में पीसकर पके फोड़े पर लेप करने से फोड़ा शीघ्र फूट जाता है।

बहरापन-१. काली मिर्च पीसकर पानी में घोलकर कान में डालें।

२. गौ मूत्र गर्म करके ड्रापर से २, ३ बूँद कान में डालें।

३. बेल का तेल कान में डालें।

४. लहसन सरसों के तेल में पकाकर तेल को कानों में डालें।

वद्ध-आक के पत्तों पर अन्डी का तेल चुपड़कर वद्ध वाले स्थान पर सेक कर दें।

वायु विकार (घुटनों का दर्द)-१. अण्डी की जड़, सोंठ का चूर्ण कर शिलाजीत तिल तेल में मिलाकर मालिश करें।

२. काली मिर्च, सोंठ, देवदार की लकड़ी समभाग चूर्ण बना लें। ५ ग्राम सुबह शाम गर्म जल से लें।

३. सोंठ बारीक पीसकर गिलोय रस से मिलाकर गोली बना लें। दूध या गर्म जल से लें।

४. सहजना के पत्ते पीसकर सरसों के तेल में पकायें। उस तेल की मालिश करें। सरसों के तेल में आवा हल्दी, चोट सज्जी कलमी तज, मेदा, लकड़ी, गेरु, समुद्र फेन, १ ग्राम नमक का चूर्ण सरसों के तेल में मिलाकर मालिश करें।

बवासीर-१. नीम की निबोली का तेल मस्सों पर लगायें।

२. बड़ी दुधी का रस १४ ग्राम प्रातः सांय पियें।

३. खरेटी के पत्तों का रस, ८ नग काली मिर्च जल में मिलाकर प्रात पिलायें।

वायु गोला-१. गाय के दूध में १० ग्राम अदरक डालकर पिलायें (अनुभूत है)।

२. अन्डी का तेल दही में मिलाकर पिलायें। मात्रा ५ ग्राम दही ५० ग्राम।

३. एलुआ सुहागे का फूला, काली मिर्च, हींग का फूला नमक की गोली बनायें। एक गोली गर्म पानी से लें वायु गोला का दर्द ठीक होगा।

बाल तोड़-१. नीम के पत्ते पीसकर टिकिया बनाकर बांधें।

२. प्याज गर्म करके वाधें।

विष वेल-सिरस का चूर्ण शहद के साथ चाटें। मात्रा २ ग्राम शहद ५ ग्राम।

विषारा-१. यह ऊगली में होता है। हंसराज बूटी के पत्ते घी में छोंक कर बाधें शीघ्र लाभ होगा। (अनुभूत है)

२. छोटी दुद्धी के पत्ते पीसकर बाधें।

३. नागफनी पीसकर मिलाकर बाधें।

बच्चों के दस्त-सूखे बेल का गूदा, आम की गुठली, हींग, काला नमक का चूर्ण कर माता के दूध में चटायें।

बाझपन-विजौरा नीबू के बीज बछड़े वाली गाय के दूध के साथ सेवन करायें।

बच्चों का निमोनिया-अमलतास की फली जलाकर कोयला कर लें। फिर उसे पीसकर शीशी में रख लें। जब बच्चे की पसली चलें तब थोड़ी सी चटायें। शहद के साथ या माता के दूध में।

बच्चों के दस्त-१. सितोपलादि चूर्ण १ ग्राम जल गुनगुना करके चम्मच से पिलायें।

२. आम की गुठली का चूर्ण दही के पानी में पीसकर नाभि पर लेप करें। **(क्रमशः)**

ऋग्वेद में सृष्टि उत्पत्ति एवं विस्तार

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

(गतांक से आगे)

नासदीय सूक्त में इसका अधिक अच्छा वर्णन हुआ है।

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परोयत्। किमावरीवः कुहकस्य-शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम्।। ऋ. 10.129.1.

सृष्टि की रचना के पूर्व न अभाव रहता और न व्यक्त जगत् रहत है, न कोई लोक रहता है और न अन्तरिक्ष तथा उसके ऊपर, नीचे के लोक लोकान्तर रहते हैं। क्या किसको घेरता है? सब कुछ कुहरे के अन्धकार में आवृत रहता है।

फिर अगले मंत्र में कहा गया है-उस अवस्था में न मृत्यु और न नित्यकाल का व्यवहार रहता है। दिन और रात्रि का ज्ञापक चिन्ह भी नहीं रहता है। प्रकृति से युक्त कम्पनरहित एक परमेश्वर अपने में स्फूर्तिमात्र रहता है। उससे भिन्न, उसके समान, उससे अधिक और उस जैसा कोई नहीं रहता है। ऋग्वेद 10.190 के मंत्रों में सृष्टि उत्पत्ति का क्रम भी दिया गया है।

ऋतं च सत्यं चाभीद्धातप-सोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।। ऋ. 10.190.1.

परमेश्वर के सर्वतो व्याप्त तप (ताप) से ऋत और कार्यरूप प्रकृति प्रकट होते हैं और उसी से प्रलय की अंधकार रूपी रात्रि उत्पन्न होती है और उसी से आकाशीय समुद्र उत्पन्न होता है?

वेद में सृष्टि-प्रलय प्रवाह से अनादि माना गया है।

सूर्या चन्द्रमसो धाता यथापूर्व-मकल्पयत। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।। ऋ. 10.190.3.

जगत् के कर्ता परमेश्वर सूर्य और चन्द्र आदि को पूर्व कल्प के समान और वैसा ही बना देता है। द्युलोक और पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा अन्य प्रकाशमानपिण्डों को भी वही बनाता है।

सृष्टि नियमानुसार बनी है और प्राकृतिक नियमों के अनुसार ही उसका संचालन हो रहा है। सृष्टि उत्पत्ति के बाद परमात्मा उसके नियमित कार्य के लिए उसे स्वतंत्र कर देते हैं।

ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरूरू व्यचो नमो मह्यरमातः पनीयसी। इन्द्रोमित्रो वरूणः संचिकित्रि-रेऽथोभगः सविता पूतदक्षसः।। ऋ. 10.92.4.

सृष्टि के शाश्वत नियम का विस्तार निश्चय द्युलोक, महान् अन्तरिक्ष पर्यन्त हित प्रशस्यतमा पृथ्वी अग्नि का प्रकाश है। विद्युत, प्राण, उदान, वायु तथा सूर्य आदि शुद्ध पवित्र बल वाले इस नियम का ज्ञान कराते हैं।

विज्ञान का मानना यह है कि सृष्टि की सीमा असीम है तथा निरन्तर सृजन के नियम के अनुसार आकाश में सृजन की क्रिया निरन्तर चलती रहती है। वेद इसका समर्थन करता है।

पवमानस्य विश्व वित्प्र ते सर्गा असृक्षत्। सूर्यस्येव न रश्मयः।। ऋ. 9.64.7.

परमात्मा के रचित कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड सूर्य की रश्मियों के समान देदीप्यमान हो रहे हैं।

वैज्ञानिक मान्यता यह है कि आकाश में कोई भी पिण्ड स्थिर नहीं रह सकता है। सभी पिण्ड लगातार गति में रहते हैं। ऋग्वेद भी इस धारणा का समर्थन करता है।

प्र सुष विभ्यो मरूतो विरस्तु प्रश्येनः शेनेभ्यः आशुपत्वा। अचक्रया यत्स्वधया सुपर्णो हव्यं भरन्मनवे देवजुष्टम्।। ऋ. 4.26.4.

इस मंत्र में वाचलुप्तोपमालंकार है। इस सृष्टि और अन्तरिक्ष में जैसे पक्षी आकाश में जाकर आते हैं वैसे ही सब लोक और लोकान्तर घूमते हैं।

सम्पूर्ण संसार गुरूत्वाकर्षण के कारण ही अपनी स्थिति बनाये हुए है इसे भी ऋग्वेद में इस प्रकार बताया गया है-

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। ऋ. 1.35.2.

पदार्थ-यह (आकृष्णेन) अपने आकर्षण के द्वारा (रजसा) लोक समूह के साथ (सविता) सबका प्रेरक सूर्य हम सबको कर्मों में प्रेरित करता है। यह सविता देव (अमृतम्) न मरने देने वाली प्राण शक्ति को (च) तथा (मर्त्यम्) मरण धर्मा शरीर को (निवेशयन्) अपने-अपने स्थान में नियत करता हुआ स्वस्थ करता है। यह (सविता देवः) प्राण शक्ति को देने वाला सूर्य (हिरण्ययेन रथेन) अपने ज्योतिर्मय रथ से (भुवनानि पश्यन्) सब प्राणियों का ध्यान करता हुआ (याति) गति कर रहा है। सूर्य का यह रथ सबका हितकारी है। सूर्य प्रजाओं का प्राण ही है। ताप के द्वारा सृष्टि उत्पत्ति के विषय में तो कई मंत्र हैं-

ब्रह्मणस्पति रेता सं कर्मारइव धमत् देवानां पूर्व्येयुगेऽ-सतसदजायत। ऋ. 10.72.2.

ब्रह्माण्ड एवं प्रकृति के स्वामी परमेश्वर ने दिव्य पदार्थों के कणों को लोहार की तरह ताप से तप्त किया है। इन दिव्य पदार्थों के कणों द्वारा सृष्टि की प्रागवस्था में अव्यक्त प्रकृति से व्यक्त सृष्टि उत्पन्न होती है। ऋ. 8.63.6 में बताया गया है कि सृष्टि की रचना पूर्व में हो चुकी है और कितने ही लोक लोकान्तर भविष्य में बनने वाले हैं।

सृष्टि की आयु कितनी है? इसका ज्ञान तो दैनिक संकल्प मंत्र से ही प्राप्त हो जाता है। इसके अनुसार वर्तमान में सातवे मन्वन्तर की अट्ठाईसवीं चतुर्युगी का कलियुग चल रहा है। इस चतुर्युगी में कलियुग के वि.स. 2072 में 5115 वर्ष व्यतीत होकर 511 6वां वर्ष चल रहा है। कुल समय का मान इस तरह निकालना चाहिए-

6 मन्वन्तर का कुल समय = 4320000×71×6 = 1840320000 वर्ष, 27 चतुर्युगी का कुल समय = 4320000×271 = 0116640000 वर्ष, अट्ठाईसवीं चतुर्युगी का सतयुग = 0001728000 वर्ष, अट्ठाईसवीं चतुर्युगी का सतयुग = 0001296000 वर्ष, अट्ठाईसवीं चतुर्युगी का सतयुग = 00008640000 वर्ष, कलियुग का वर्तमान समय = 0000005116 वर्ष, कुल योग = 1960853116 वर्ष

इसके अतिरिक्त वेदानुसार सृष्टि के बनने में 6 चतुर्युगी का समय = 4320000×6 = 25920000 वर्ष लगे हैं। इससे Big Bang होने का समय = 1960853116+25920000 वर्ष 1986773116 वर्ष पूर्व रहा है। वैज्ञानिकों की नवीनतम मान्यता कि सम्पूर्ण संसार ऊर्जा का ही एक रूप है। इसे निम्न मंत्र बता रहा है-

यस्मादिन्द्राद् बृहत् विञ्च-नेमृतेविश्वान्यस्मिन संभृता-धिवीर्य्या। जठरे सोम तन्वी सहो महो हस्ते वज्रं भरति शीर्षणि क्रतुम।। ऋ. 2.16.2.

हे मनुष्यों! यह जगत् जिस बड़े विद्युत अग्नि (ऊर्जा) के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है इसे जानने का प्रयत्न करो।

वेदों में आत्मा को अनादि माना गया है। डा. स्टीफन डबल्यू हाकिंग ने अजीव से सजीव उत्पन्न होने की बात कही है परन्तु अधिकांश वैज्ञानिकों काह्यह्य मत उसके विरोध में है। डा. मारलिन बुक्स प्रोफेसर जीव विज्ञान मेरीलैण्ड विश्वविद्यालय लिखते हैं-पास्चर के समय से ही यह वैज्ञानिक तथ्य स्वीकार किया गया है कि किसी अजीव द्रव्य से जीव की उत्पत्ति नहीं हो सकती है।

योग्यतम की विजय से इतना तो पता चलता है कि कुछ परिवर्तन होता है परन्तु उससे यह पता नहीं चलता कि कुछ प्राणियों एवं पौधों में इतनी किस्में, इतनी जातियां कैसे बन जाती है? अधिकांश वैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि यदि सृष्टि की उत्पत्ति हुई है तो उसका रचयिता भी है और वह निराकार हैं। चूंकि अब यह सिद्ध हो गया है कि सृष्टि की रचना हुई है तो यह भी सिद्ध है कि उसका धाता ब्रह्म भी है। ऋग्वेद में ईश्वर, जीव और प्रकृति का आपसी सम्बन्ध भी निम्न मंत्र द्वारा बताया गया है-

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्य पिप्पलंस्वाद्वत्यन-श्नन्नयो अभिचाक शीति।। ऋ. 1.164.20.

इस मंत्र में रूपकालंकार है। जीव, परमात्मा और जगत् का कारण प्रकृति ये तीन पदार्थ अनादि और नित्य हैं। जीव और ईश्वर यथाक्रम से अल्प अनन्त चेतन विज्ञान वान् सदा विलक्षण, व्याप्त व्यापक भाव से संयुक्त और मित्र के समान वर्तमान हैं, वैसे ही जिस अव्यक्त परमाणुरूप कारण से कार्यरूप जगत् होता है, वह भी अनादि नित्य है। समस्त जीव पाप पुण्यात्मक कार्यो को करके उनके फलों को भोगते हैं और ईश्वर एक सब ओर से व्याप्त होता हुआ न्याय से पाप पुण्य का फल देने से न्यायाधीश के समान देखता है।

वेदों में सृष्टि को असीम माना गया है। ऋग्वेद में कहा गया है-

एते मृष्टा अमर्त्याः ससृवांसो न शश्रमुः। इयक्षन्तः पथो रजः।। ऋ. 9.22.4.

बहुत से ऐसे नक्षत्र हैं जिनका प्रकाश उनके निर्माण काल से पृथ्वी की ओर चल रहा है परन्तु वह अभी तक पृथ्वी तक नहीं पहुंच पाया है।

इस छोटे से लेख से हमें ज्ञान हो गया है कि वेद का ज्ञान विज्ञान के कितना अनुरूप है।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया

24 दिसम्बर आर्य समाज ओहरी चौंक बटाला द्वारा महान स्वतन्त्रता सेनानी, अमर हुतात्मा एवं शुद्धि आन्दोलन के नायक स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस स्थानीय आर्य माडल स्कूल में बड़ी श्रद्धा से मनाया गया जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज के संरक्षक जतिन्द्र नाथ शर्मा ने की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ पवित्र हवन यज्ञ से शुरू हुआ उसके बाद स्वामी जी को श्रद्धांजलि देने का कार्यक्रम शुरू हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व मुख्य ससंदीय सचिव जगदीश राज साहनी ने कहा कि जिस प्रकार स्वामी जी ने अपना बलिदान देकर भारतीय संस्कृति व हिन्दु जाति के सम्मान को जीवित रखने का प्रयास किया वह वास्तव में ना केवल सराहनीय है बल्कि प्रेरणादायक भी है। उन्होंने कहा कि लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति के विपरीत भारतीय परम्परा से बच्चों शिक्षित करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना करना भी उनकी देश प्रति सच्ची दूरदर्शिता की झलक दिखलाता है।

इस अवसर पर स्वामी जी का श्रद्धा सुमन भेंट करते हुए स्कूल की प्रिंसीपल रजनी बहल ने कहा कि देहली में अंग्रेज सिपाहियों की संगीनों के समक्ष सीना तान देना उनकी निडरता का उदाहरण है वही जामामस्जिद की प्राचीर से पवित्र वेद मन्त्रों से अपने भाषण का सम्बोधन हिन्दु मुस्लिम सौहार्द कायम करने के उनके प्रयास की जानकारी देता है। उन्होंने कहा कि मगर कुछ कट्टरवादी तत्वों द्वारा उनकी हत्या करके देश को एक महान राष्ट्र भक्त से वंचित कर दिया जिस व्यक्ति ने राष्ट्रपिता को महात्मा की उपाधि दी थी।

इस अवसर पर आर्य समाज प्रधान प्रविन्द्र चौधरी आर. एस. एस. के जिला संचालक कुलदीप महाजन, नगरसंचालक अरुण अग्रवाल भाजपा जिला प्रधान राकेश भाटिया, रजन मल्हौत्रा, स्कूल प्रबंधक विजय अग्रवार वलाविन्द्र मेहता मंत्री, सोहन लाल प्रभाकर, शक्ती शर्मा, भूषण बजाज, वीरेन्द्र लाडी, पवन भारद्वाज, पूर्व पार्शद पवन शर्मा, रोहित सैली, राम रक्खा, अश्वनी सुन्दर प्रिं. नीरू सैली, सतप्रकाश बदल, अशोक अग्रवाल, बलदेव वेदी, रिशीदत गुलाटी, के.एल. गुप्ता, सुशील बांसल आदि भी उपस्थित थे।

वर्ष 2019 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षो से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2019 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य पांच रुपये प्रति तथा 500 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

बलिदान दिवस-हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में दिनांक 23-12-2018 (रविवार) को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर एक विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया है। कैनेडा से पधारे श्रीमती चेतना शर्मा और सुपुत्र कशाग्र ने यजमान पद को सुशोभित किया। साथ ही नगर से श्रीमती मंजु वालिया ने भी यजमान पद ग्रहण किया। नगर से पहुँचे आर्य जनों ने बढ़ चढ़ कर आहुतियां डाली। तत्पश्चात दयानन्द हाल में कार्यक्रम चला। श्रीमती दुर्गेश नन्दिनी और श्री बलराज वासदेव ने प्रभु भक्ति पर सुन्दर भजन सुनाये। सचिव प्रो० यश वालिया ने "कल्याण मार्ग के पथिक" स्वामी श्रद्धानन्द के बहुमुखी जीवन पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती के दिव्य सम्पर्क से विलासता में पड़ा हुआ मुन्शी राम अन्ततः स्वामी श्रद्धानन्द की हीरक पदवीं को प्राप्त हुआ। अपने मुख्य उदबोधन में प्रि० कैलाश चन्द्र शर्मा ने स्वामी श्रद्धानन्द को महर्षि दयानन्द का सच्चा सिपाही बताया और कहा कि जहां मुन्शी राम की धुरी आर्य समाज ही रही वहां विद्या के क्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द का सर्वश्रेष्ठ कार्य गुरूकुल प्रणाली को पुनः जागृत करना और देखते-देखते आज देश में एक नहीं कई गुरुकुल कार्यरत हैं। अंत में प्रि० शर्मा ने कहा कि दयानन्द की घुटी पीकर श्रद्धानन्द वेदमयी हो गये निसंदेह समूचा आर्य जगत स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति नत मस्तक है, शत शत नमन है हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को।

-यश वालिया

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज दीनानगर की ओर से दिनांक 23-12-2018 को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस मनाया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी सन्तोषानन्द जी महाराज ने की। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता श्री भारतेन्दु ओहरी, प्रिंसीपल गन्धर्व राज महाजन, एस.एस.एम. कालेज के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा. राजन हांडा, आर्य समाज के प्रधान रघुनाथ शास्त्री, निवास शास्त्री एवं किशोर शास्त्री थे। सभी वक्ताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला और कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का हिन्दू जाति पर बहुत उपकार है अगर स्वामी जी ने शुद्धि आन्दोलन ना चलाया होता तो आज की हिन्दू जाति मुसलमान हो गई होती। श्री भारतेन्दु ओहरी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज हमें फिर स्वामी श्रद्धानन्द की आवश्यकता है जिन्होंने गुरूकुल प्रणाली चला कर एवं लड़कियों के लिए शिक्षण संस्थाएं खोल कर शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही योगदान दिया। उन्हीं की बदौलत आज लड़कियां पढ़ लिख कर बहुत ही उच्च पदों पर आसीन है। शास्त्री किशोर जी ने अपने भजन के माध्यम से स्वामी जी को श्रद्धाँजली दी। उनका भजन-स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी ओ तेरे तो जमाना सदके। पर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। इस अवसर पर श्री वेद प्रकाश ओहरी, सचिव रमेश महाजन, कोषाध्यक्ष राजेश महाजन, अरूण विज, मनोरंजन ओहरी, सुमित महाजन, रमेश शास्त्री, मुनीष महाजन, कैलाश शर्मा, सरदारी लाल, आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल के सभी अध्यापक वर्ग एवं दयानन्द मठ के सभी ब्रह्मचारी उपस्थि थे। कार्यक्रम के पश्चात् जलपान का प्रबन्ध किया गया।

-रमेश महाजन महामन्त्री आर्य समाज दीनानगर

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में गायत्री महायज्ञ

आप को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर में दुःख निवारक सुखवर्षक पवित्र गायत्री महायज्ञ दिनांक 14 जनवरी 2019 दिन सोमवार मकर संक्रान्ति प्रारम्भ होकर 13 फरवरी दिन बुधवार तक लगातार एक मास बड़ी श्रद्धा व उत्साह से आयोजित किया जा रहा है। इस गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति 13 फरवरी 2019 बुधवार को होगी। कार्यक्रम का समय दोपहर 2:30 से 4:30 बजे तक रहेगा। इस अवसर पर 14 जनवरी से 20 जनवरी तक स्वामी विष्वङ जी (अजमेर), 21 जनवरी से 25 जनवरी तक आचार्य सोमदेव जी (अजमेर), 26 जनवरी से 31 जनवरी तक आचार्य महावीर मुमुक्षु जी (मुरादाबाद), 1 फरवरी से 6 फरवरी तक आचार्य राजू वैज्ञानिक जी (दिल्ली) तथा 7 फरवरी से 13 फरवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी (सुन्दरनगर) को आमन्त्रित किया गया है। स्त्री समाज की बहनों के द्वारा भजन गाए जाएंगे। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्यप्रकाश शास्त्री जी तथा पं. बुधदेव वेदालंकार होंगे। इस कार्यक्रम में पुरुष भी सादर आमन्त्रित हैं। आप सभी अपने परिवार व इष्ट मित्रों सहित पधार कर परम पावन गायत्री महायज्ञ में आहुतियां प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन

पृष्ठ 8 का शेष-लुधियाना में स्वामी...

में हुये कांग्रेस अधिवेशन के मुख्य वक्ता बन सबके हितैषी हो गये। महर्षि दयानन्द के पीछे पंडित लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानंद जी तथा अनगिनत अनुयायियों ने त्याग व समर्पण की भावना को रखते हुये वैदिक धर्म के कार्य व राष्ट्र प्रेम की ज्योति को प्रज्वलित रखा। लेकिन आज हम सब को संकल्पबद्ध हो इस कार्य को पुन: उसी लगन व गति से आगे बढ़ाना होगा तभी हमारा बलिदान दिवस मनाना सार्थक होगा। प्रो. श्रीमती सतीशा शर्मा जी ने राष्ट्र कवि प्रो. सुरेश वात्सयायन द्वारा लिखित स्वामी श्रद्धानंद जी की जीवनी पर सुन्दर कविता प्रस्तुत की।

मंच का संचालन कर रहे जिला आर्य सभा के महामंत्री डा. विजय सरीन ने आचार्य जी तथा परूथी जी के विचारों पर मनन करते हुये कहा कि हमें भी स्वामी श्रद्धानंद जैसी त्याग व समर्पण की भावना अपने अंदर लानी चाहिये। जिला आर्य सभा की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी ने परमात्मा के धन्यवाद के पश्चात सभी विद्वानों तथा उपस्थित आर्यजनों का भी धन्यवाद किया व कहा कि हमें भी अपने पूर्वजों की तरह वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार, समाज व राष्ट्र सेवा में बढ़ चढ़ कर कार्य करना चाहिये। इस समारोह में लुधियाना जिला की सभी आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं के सभी अधिकारी व सदस्य बहुगिनती में उपस्थित हुये। सर्वश्री बलदेव राज, राजेन्द्र बेरी, सतपाल नारंग, रोशन लाल, रणवीर शर्मा, राजेन्द्र कौड़ा, अमरेश कुमार, अरुण सूद, अमरनाथ तांगरा, सतपाल मोंगा, रमेश सूद, मुनीष मदान, हर्ष आर्य, रमाकांत, अजय बत्रा, अशोक भारद्वाज, रवि महाजन, जनक राज भगत, कर्मवीर गुलाटी, प्रिं. सविता उप्पल, निर्मल कान्ता, रेणु भंडारी, मेधा शर्मा, श्रीमती सविता शर्मा, विनोद गांधी, किरण टंडन, जनक आर्या आदि ने पहुंच कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। शांति पाठ के पश्चात सबने मिल कर ऋषि लंगर ग्रहण किया। आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल की प्रिसीपल व प्रबन्धकृत्री सभा व स्टाफ का पूर्ण सहयोग के लिये धन्यवाद।

डा. विजय सरीन
महामंत्री आर्य जिला सभा लुधियाना

श्रीमती राजेश शर्मा जिला आर्य सभा लुधियाना की पुन: प्रधान निर्वाचित

जिला आर्य सभा लुधियाना की साधारण सभा की बैठक 30 दिसम्बर 2018 को आर्य सी. सै. स्कूल पुरानी सब्जी मण्डी आर्य स्कूल रोड़ लुधियना में दोपहर 3:00 बजे हुई। इस मीटिंग का निश्चय 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर किया गया था। श्री राजेन्द्र कौड़ा तथा अन्य सदस्यों ने कहा कि अन्तरंग सभा को जिला आर्य सभा भंग करने का कोई अधिकार नहीं है, यह अधिकार साधारण सभा को है। इसलिए सभी सदस्यों ने साधारण सभा की बैठक बुलाने का आग्रह किया। सर्वसम्मति से 30 दिसम्बर को साधारण सभा की बैठक निश्चित हो गई।

30 दिसम्बर को साधारण सभा की बैठक प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम सभी सदस्यों ने ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के मन्त्रों का पाठ किया। साधारण सभा के सभी सदस्यों ने अन्तरंग सभा द्वारा पारित जिला आर्य सभा भंग करने के प्रस्ताव को खारिज किया और पुन: चुनाव करवाने का आग्रह किया। सर्वसम्मति से इस प्रस्ताव को स्वीकार किया गया और जिला आर्य सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रवि महाजन जी की अध्यक्षता में चुनाव की प्रक्रिया प्ररम्भ हुई। सर्वप्रथम चुनाव अधिकारी श्री रवि महाजन ने उपस्थित जिला आर्य सभा के प्रतिनिधियों से प्रधान पद के लिए नाम प्रस्तुत करने का आग्रह किया। इसके पश्चात श्री राजेन्द्र कौड़ आर्य समाज रायकोट ने जिला आर्य सभा लुधियाना के प्रधान पद के लिए श्रीमती राजेश शर्मा का नाम प्रस्तुत किया। श्री रमेश सूद मन्त्री आर्य समाज फील्डगंज, श्री वजीर चन्द प्रधान आर्य समाज साहनेवाल, श्री अमरनाथ तागरा आर्य समाज समराला तथा श्रीमती रमेश महाजन ने इसका अनुमोदन किया और सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया। सर्वसम्मति से सभी सदस्यों द्वारा कार्यकारिणी गठित करने का अधिकार नवनिर्वचित प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा को दिया गया। इस बैठक में जिले के सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। आर्य समाज सहनेवाल के प्रधान श्री वजीर चन्द, श्री राकेश पाठक, श्री अमित शर्म, आर्य समाज पायल के प्रधन श्री रामपाल सचदेव, अनिल कुमार, आर्य समाज रायकोट के प्रधान श्री महन्तदास, श्री राजेन्द्र कौड़ा, आर्य समाज समराला से श्री अम्बरीश, श्री राम खुल्लर, श्री अमरनाथ तागरा, आर्य समाज दोराहा से श्री अरूण थापर, श्री श्रवण बत्रा, आर्य समाज साबुन बाजार के प्रधान श्री रणवीर शर्मा, श्री सुनील शर्मा, श्री जय प्रकाश परनेसर, श्री अभिनव पराशर, स्त्री आर्य समाज से श्रीमती सविता शर्मा, श्रीमती इन्द्रा होड़ा, आर्य समाज फील्डगंज से श्री विनोद सूद, श्री रमेश सूद, आर्य समाज जवाहर नगर के प्रधान श्री विजय सरीन, श्री अनिल कुमार, आर्य समाज हबीबगंज से श्री मनीष मदान, श्री जनक भगत, श्री शान्तिलाल चुघ, श्रीमती विनोद गान्धी, श्री मनोहर लाल आर्य, श्री रवि महाजन, डॉ. बी. के. भनोट, श्री विवेक शर्मा, श्री अरूण सूद, श्री नीरज शर्मा, श्रीमती रमेश महाजन आदि उपस्थित थे।

रवि महाजन चुनाव अधिकारी जिला आर्य सभा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य समाज नंगल के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया। प्रात: 10:00 बजे हवन यज्ञ में सतीश अरोड़ा (प्रधान) सहपत्नी श्रीमति आशा अरोड़ा (सदस्य) मुख्य यज्ञमान के रूप में उपस्थित हुए। पुरोहित श्री कृष्णकांत जी ने बड़े श्रद्धा भाव से मन्त्रोचारण कर हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा भेजे गए, भजोपदेशक श्री सतीश सुमन जी ने, स्वामी श्रद्धानन्द (सर्वस्व त्यागी) जी की जीवन गाथा का व्याख्यान बड़े सरल ढंग से भजनों द्वारा गाकर सभी को प्रभावित किया। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन के सम्पूर्ण रूप से संचालक थे। वीरता बलिदान उनके रोम-रोम में कूट-कूट भरी थी। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी भारत में एक राष्ट्रीयता, एक संगठन, एक जाति, एक धर्म, एक भाषा के प्रचार के लिए शुद्धि आन्दोलन एवं शुद्धि का कार्य किया। उन्हों बताया के स्वामी जी ने सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। स्वराज हासिल करने के लिए देश को अंग्रेजों की दासता से छुटकारा दिलाने हेतु, दलितों को उनके अधिकार दिलाने हेतु और पश्चिमी शिक्षा की जगह वैदिक शिक्षा प्रणाली का प्रबन्ध करने जैसे अनेक कार्य किए। सन् 1901 में वैदिक शिक्षा के लिए गुरूकुल की स्थापना की। वह गुरूकुल अब "गुरूकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय हरिद्वार" के नाम से प्रसिद्ध है।

कार्यक्रम के आयोजन का मकसद बताते हुए आर्य समाज के प्रधान सतीश अरोड़ा ने बताया कि किस तरह से हमारे पूर्वजों ने हमें धर्म मार्ग पर चलने रहने की प्रेरणा दी है। यह बताने के लिए ही इस तरह ही दिवस माए जाते हैं। इसलिए सभी आदर्श व अनुशासन से वेद ग्रन्थों के बताए रास्ते पर चलकर मानवता की सेवा के लिए किए जा रहे प्रयासों को और तेज करें। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी एक महान शिक्षाविद, स्वतन्त्रता सैनानी एवं आर्य समाज के अग्रणी सन्यासी थे। और उन्होंने कहा कि स्वामी जी को सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हो तो हमें उनके द्वारा राष्ट्र के लिए किए गए कार्यों को अपनाना होगा और उन्होंने जो मार्ग दिखलाया है, उस मार्ग पर चलना पड़ेगा, तभी हमारी उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस मौके पर मन्दिर के ननिर्वित कार्यालय का उदघाटन मंदिर कमेटी के संरक्षक आसकरन दास सरदाना जी ने किया। कार्यक्रम में ओ.पी. खन्ना, राजीव खन्ना, राजीखन्ना, करन खन्ना, सतपाल जौली, हरिंदर भारद्वाज, प्रेम सागर, अमरनाथ शर्मा, दीवानचन्द शर्मा, कांता भारद्वाज माता, आशा अरोड़ा, नरेश सहगल, अशोक भाटिया, नितिन खन्ना, जे.पी. शारदा, आर.परी. बट्टू, योगाचार्य राजपाल सिंहा राणां, एम. के. शर्मा, प्रीसिपल रजनीश शर्मा, सतीश कौशल, प्रेम प्रकाश शर्मा, पंकज खन्ना, अनु शर्मा, डी.एस. चौहान, हनी सेठ, तरसेम लाल, आर्य समाज के पुरोहित श्री कृष्णकांत शर्मा जी आदि भी मौजूद थे।

सतीश अरोड़ा, प्रधान आर्य समाज, नंगल

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज बस्ती दानिशमंदा...

श्री बाबू सरदारी लाल जी आर्यरत्न की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। श्री सुरेन्द्र आर्य जी बस्ती बावा खेल तथा भार्गव नगर स्त्री सभा की माताओं ने अपने मधुर भजनों के द्वारा वातावरण को सुन्दर बना दिया। पं विजय कुमार शास्त्री एवं पं. सुरेश कुमार शास्त्री जी ने अपने प्रवचनों के द्वारा महर्षि दयानन्द एवं स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। अंत में कार्यक्रम के अध्यक्ष बाबू श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न ने अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश ड़ालते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ करके बिछुड़े हुए भाईयों को गले लगाने का कार्य किया। गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना करने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस मनाते हुए हम सभी को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। आर्य समाज के प्रधान श्री यशपाल ने सभी आए हुए आर्य महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री श्री सुदेश आर्य जी के द्वारा जरूरतमन्दों को कम्बल बाँटे गए। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ एवं उपस्थित आर्यजनों ने लंगर ग्रहण किया। इस अवसर पर सर्वश्री सुदेश आर्य, कमल किशोर, राजकुमार प्रधान वेद मन्दिर भार्गव नगर, वेद आर्य महामन्त्री आर्य नगर, सुरेन्द्र कुमार, सतपाल प्रधान आर्य नगर, निर्मल कुमार मन्त्री बस्ती बावा खेल, जयचन्द प्रधान संत नगर राजपाल गांधी नगर-1, श्री अमरनाथ सूबेदार गांधी नगर-2, अश्विनी कुमार आर्य समाज कबीर नगर, जनकराज मेन बाजार बस्ती दानिशमन्दा, हरिप्रकाश आदि महानुभाव उपस्थित थे।

यशपाल आर्य
प्रधान आर्य समाज

लुधियाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस जिला स्तर पर आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल लुधियाना में मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जन हवन करते हुये जबकि चित्र दो में आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट एवं उनकी धर्मपत्नी का समारोह में पहुंचने पर स्वागत करते हुये श्री अरुण सूद जी, जिला आर्य सभा लुधियाना की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी, श्रीमती सतीशा शर्मा जी, प्रिंसीपल सविता उप्पल जी एवं जिला आर्य सभा लुधियाना के महामंत्री डा. विजय सरीन जी। चित्र तीन में उपस्थित आर्यजन।

जिला आर्य सभा लुधियाना द्वारा स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन रविवार 23 दिसम्बर 2018 को आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल लुधियाना में बड़ी श्रद्धा व उत्साह के साथ किया गया। समारोह का शुभारम्भ पं. राजेन्द्र व्रत जी शास्त्री ने पवित्र यज्ञ से करवाया। तीन यज्ञ कुंडों पर बैठकर यजमानों ने बड़ी श्रद्धा के साथ आहुतियां प्रदान की। यज्ञ का प्रबन्ध श्री श्रवण बत्रा जी ने किया। आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार माननीय श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट सपत्नीक ने ज्योति प्रज्वलित कर मुख्य कार्यक्रम का आरम्भ किया। जिला आर्य सभा व भिन्न भिन्न आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों ने फूलमालाएं पहना कर उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

आर्य समाज समराला के पुरोहित पंडित राजेन्द्रव्रत शास्त्री जी ने प्रभु भक्ति का एक भजन करो प्रभु से प्यार, अमृत बरसेगा सुना कर अपने भजनों की कड़ी को प्रारम्भ किया। महर्षि दयानन्द पर भजन ऋषि कौम का रहनुमा बन के आया, दुखियों बेबसों का सहारा बन के आया सुनाने के बाद स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा किये गये कार्यकलापों का वर्णन करते हुये इस प्रकार भजन स्वामी श्रद्धानंद वीर बलिदानी तेरे तो जमाना सदके व मेरा रंग दे बसन्ती चोला माए नी मेरा रंग दे बसन्ती चोला सुना कर श्रोताओं में जोश भर दिया।

श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट ने अपने सम्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानंद ने देश के प्रति अपनी कृतज्ञता दर्शाते हुये पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के स्थान पर वैदिक गुरुकुल प्रणाली को गुरुकुल कांगड़ी के रूप में पुन: स्थापित किया जहां पर उन्होंने ब्रह्मचारियों के अंदर देश प्रेम व राष्ट्र भक्ति को जगा कर देश की आजादी के लिये सर्वस्व न्यौछावर करने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने श्रद्धेय आचार्य रामानंद जी को स्वामी श्रद्धानंद जी की जीवनी के बारे में विस्तार से उपस्थित आर्यजनों को बतलाने के लिये अपना ओजस्वी प्रवचन करने के लिये आमंत्रित किया। आचार्य जी ने अपने प्रवचन के आरम्भ में बतलाया कि जो लोग अपने देश के बलिदानियों के उपकारों को याद रखते हुये उनके मार्ग पर चल उनके कार्य को आगे बढाते हैं वह प्रशंसा के योग्य हैं तथा कृतज्ञता के पात्र बनते हैं। उसके विपरीत कृतघ्न माने जाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी ने बड़ी निर्भीकता के साथ गुरुकुल कांगड़ी में ब्रह्मचारियों को राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिये मर मिटने के लिये प्रेरित किया तथा देशवासियों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा किये जा रहे अत्याचार प्रतिबंधों का विरोध किया जिससे वह हिन्दू सिख मुस्लिम सबके आदरणीय हो गये। जामा मस्जिद, अकाल तख्त तथा अमृतसर **(शेष पृष्ठ सात पर)**

आर्य समाज बस्ती दानिशमंदा का 39वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मंदिर लसूडी मुहल्ला बस्ती दानिशमंदा का 39वां वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित शोभायात्रा का शुभारम्भ करते हुये पंडित मनोहर लाल जी आर्य, आर्य समाज के प्रधान श्री यशपाल आर्य, श्री विजय कुमार शास्त्री महोपदेशक, श्री सुदेश कुमार मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं अन्य जबकि चित्र दो में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी एवं आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर के संरक्षक श्री कमल किशोर जी ध्वजारोहण करते हुये। उनके साथ खड़े हैं आर्य समाज बस्ती दानिशमंदा के सदस्य।

आर्य समाज वेद मन्दिर लसूड़ी मोहल्ला बस्ती दानिशमन्दा जालन्धर का 39 वां वार्षिक उत्सव तथा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 16 दिसम्बर से 23 दिसम्बर 2018 तक बड़े हर्षोल्लास एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस असवर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन एवं श्री सुरेन्द्र आर्य बस्ती वावा खेल के सुमधुर भजन होते रहे। 16 दिसम्बर से प्रात: 5:30 से 7:00 बजे तक प्रभातफेरियों का आयोजन किया गया। रात्रि 8:00 से 9:30 बजे तक वेद कथा पं. विजय शास्त्री जी द्वारा की गई तथा भजन गायन श्री सुरेन्द्र आर्य द्वारा किया गया। 22 दिसम्बर शनिवार को दोपहर 2:00 बजे शोभायात्रा निकाली गई। नगर के गणमान्य महानुभावों ने इस शोभा यात्रा में भाग लिया।

23 दिसम्बर रविवार को मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. मनोहर लाल आर्य तथा पं. विजय कुमार शास्त्री ने यजमान दम्पत्तियों से आहुतियां डलवाई तथा आशीर्वाद प्रदान किया। मुख्य यजमान श्री हरि प्रकाश व श्री निर्मल आर्य परिवार सहित यज्ञ वेदी पर उपस्थित हुए। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आरम्भ हुआ। आर्य समाज भार्गव नगर के संरक्षक श्री कमल किशोर आर्य जी ने अपने करकमलों से ध्वजारोहण किया। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उपप्रधान **(शेष पृष्ठ सात पर)**

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।